महिला सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान

विजया माणिक पाटील शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर जिजाई, तिरंगा कॉलोनी, विद्यानगर, ता. कराड, जी. सातारा, महाराष्ट्र मोब.क्रं.: 9403969189

सार:-

वैदिक काल से नारी समाज का अभिन्न अंग होकर भी ना के बराबर उसका अस्तित्व माना जाता है। महिलाओं की तरफ देखने का नजरिया बहुत ही चिंताजनक रहा है। उपभोग की वस्तु से ज्यादा महिलाओं का मनुष्य के जीवन में ऊपर का स्थान नहीं है। भारत वर्ष के पुराणों में कहा है,'मातृ देवो भव','यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता।' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहाँ ईश्वर का निवास होता है। प्राचीन काल से महिलाओं को देवी के रूप में दिखाया गया है फिर भी उसे देवत्व प्राप्त नहीं हुआ बल्कि उसे राक्षसी रूप में भी प्रस्तुत किया है। अपने संसार के लिए दिन-रात काम करने के बावजूद उनके कार्य की कोई दखल नहीं होती। उसे कठपुतली की तरह नचाया जाता है। लेकिन सम्मान नहीं मिलता। महिला हर युग में उपेक्षित रह चुकी हैं।आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति काफी हद तक बदल चुकी है। फिर भी क्या आज भी महिला अपने समाज में सुरक्षित है? घरेलू हिंसा की शिकार नहीं होती ?अपने मन से निर्णय लेने का हक प्राप्त हो चुका है? यह सोचने वाली बात है। असमानता, मानवीय आचरण में फँसी नारी को शक्ति रूपा कहा जाता है। आज वह अपने अस्तित्व को पहचानने लगी है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा साहित्यिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर चुकी है। आज हिंदी साहित्य में महिलाओं के प्रवेश ने स्त्री- सशक्तिकरण का नारा गूंजने लगा हैं। प्रारंभिक रचनाओं में स्त्री की स्वतंत्रता के स्वर प्रबल हो रहे हैं।परिवार में शोषित स्त्री थी आज स्वतंत्रता की उड़ान भर रही है। सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। सरकार की ओर से भी महिला सम्मान के लिए प्रयास किया जा रहे हैं।शिक्षा के अवसर ने महिलाओं को अपने हक के लिए लड़ना सिखाया। उत्थान- पतन के कितने दौरों से गुजरती हुई महिला वर्तमान में अपना स्थान लेने में कामयाब हो रही है। प्रेमचंद पुर्व के साहित्यकारों ने महिलाओं को एक शृंगारिक रूप में ही प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद युग के साहित्य में पहली बार मानवीय धरातल पर स्त्री की अस्मिता को सम्मान प्रदान किया है।

स्मृति ग्रंथो में नारी के व्यक्तित्व एवं समाज में उसकी स्थिति का विशद विवेचन हुआ है। हिंदू- धर्म ग्रंथो में एक ओर नारी की प्रशंसा का प्राचुर्य हैतो दूसरी ओर नारी-निंदा भी कम नहीं हुई। नारी निंदा की यह भावना केवल भारत तक सिमित नहीं रही। संसार के अन्य धर्म ग्रंथो में भी नारी निन्दा का प्राबल्य रहा हैं। यूरोप के प्रसिद्ध लैटिन धर्म योजक 'टारटुलियन' ने नारी के संबंध में लिखा था की नारी शैतान का द्वार है, दैवी नियम या धर्म का सबसे पहले त्याग करने वाली है। सेंट आगास्टिन तो कहा करते थे कि नारी चाहे माता के रूप में हो, चाहे बहन के रूप में हो लेकिन हमें उससे सदैव सचेत रहना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक स्त्री में हौवा का निवास है। 1

इससे साफ प्रतीत होता है कि नारी को केवल विनाश का कारण माना है। सृष्टि निर्माण करने में नारी का सहभाग का कोई मूल्य दिखाई नहीं देता।

महिला सशक्तिकरण में साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण रहा हैं। हिंदी साहित्य काफी हद तक महिलाओं का आवाज बनने में सक्षम रहा है।उपन्यास, कहानी, कविताओं में नारी को मध्य रखकर उनके कार्य को ऊंचाई पर लेने का कार्य किया है। महिलाएं उनका त्याग, समर्पण समाज के प्रति, अपने संसार के प्रति, अपने कार्य के प्रति, रिश्ते- नाते आदि के प्रति जो बलिदान देती आयी हैं उनकी इन भावनाओं को साहित्य में उजागर किया है।

डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है-" पुरुष निःसंग हैं,स्त्री आसक्त, पुरुष निर्द्वन्द् है स्त्री द्वन्दोन्मुखी। पुरुष मुक्त हैं, स्त्री बध्दा।"2 यथार्थ पुरुष योगी, उदासीन और निर्जन वासी होता है। उसे निर्जन में रहना पसंद आता हैं। स्त्री पुरुष को योग से संसार की ओर उन्मुख करके कर्मशील बनाती है। गांधीजी की महिलाओं के प्रति कहते थे ईश्वर ने नारी को मनोवैज्ञानिक दिमाग दिया है, कमी सिर्फ आत्मविश्वास की हैं।प्रेम, करुणा,ममता सभी भावनाएँ एक नारी में दिखाई देती है। समाज के परंपरागत मूल्यों ने उसे पहचानने का अवसर नहीं दिया।

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। नारी के निंदनीय और सम्मान दोनों दशाओं का साहित्य में चित्रण हुआ हैं। मध्यकाल में नारी की कुंठित स्थिति को चित्राया है तो रीतिकाल में नारी को विलासता का केंद्र मानकर काव्य रचना की गई। डॉ. नगेंद्र ने लिखा है-" रीतिकाल में पुरुष को नारी विशेष की वैयक्तिक सत्ता(इनडिविजुयलिटी) से प्रेम नहीं था, उसके नारीत्व से ही प्रेम था।" 3

हिंदी महिला साहित्यकार भी अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में महिला सशक्तिकरण के लिए प्रचुर मात्रा में योगदान दे रही हैं। महिला सशक्तिकरण के इस विशिष्ट स्वरूप की विचारधारा को साहित्यकारों ने गंभीरता से लिया हैं। मैत्रेयी पुष्पा का

'चाक,' प्रभात खेतान का 'छिन्नमस्ता', मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब'एवं चित्रा मुद्गल का 'आँवा' आदि। इन रचनाएँ सभी स्त्री- वर्ग की देह-दोहन को निरस्त करती हुई अपनी अस्मिता की रक्षा का प्रयत्न करती है। लेखिकाओं ने इन रचनाओं के माध्यम से पुरुष वर्ग के वर्चस्व में,पुरुष सत्ता के शृंखला में जखड़ी स्त्री समाज को सतर्क करके उसे साबला बनाकर स्वावलंबन की ज्योत प्रज्वलित करने का प्रयास किया है। यह नहीं चेतना, नया विचार महिलाओं के कल्याण का सुखद संकेत है। भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछले कुछ सदियों से काफी बदलाव आए हैं।नारी साहित्य लेखन एक ओर स्वांत सुखाय है,तो दूसरी ओर जन हिताय है। नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक रहा हैं।

महिला सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान के विषय पर कुछ उपन्यासों को हम देख सकते हैं। प्रभा खेतान के' छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए पारिवारिक संबंधों को तोड़ते हुए परंपरागत नीति मूल्यों को तोड़ना चाहती हैं। दमन नीति का विद्रोह करते हुए अपने साथ दूसरी स्त्रियों को भी प्रेरित करती है। 'छिन्नमस्ता'परंपरागत मिथ्यों को तोड़ता है। यह आधुनिक काल में स्त्री का अपने न्याय के लिए लड़ना एक साहसी कदम है। प्रभा खेतान शोषण मुक्त नारी जीवन की पक्षधर है।उनका उपन्यास 'छिन्नमस्ता' स्त्री दुर्भाग्यपूर्ण नियति को घोषित करता है। मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' और 'इदन्नम' उपन्यास स्त्री सशक्तिकरण करण के नए पहलुओं को उजागर करता हैं। चाक उपन्यास की नायिका सारंग नैनी कृषक परिवार में जन्मी, अतरपुर जैसे आंचल गांव में बड़ी हुई लड़की है। पढ़ी-लिखी होकर भी उसके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं।वैवाहिक जीवन में पति को चुनौती देना, प्रेमी को अपनाना जैसे विद्रोह स्वर 'चाक' उपन्यास में चित्रित हैं। अंत में सारंग नैनी अतरपुर की महिलाओं को इकट्ठा करके नारी शक्ति को जन्म देती हैं। इस प्रकार नारी संगठन के शक्ति परिणाम दर्शाने वाली 'चाक' रचना महिला सशक्तिकरण के लिए योगदान रही हैं। मैत्रेयी पुष्पा का 'इद्न्म' उपन्यास कई पुरस्कारों से नवाजा गया हैं।

डॉ. निर्मल जैन का कथन है-''वस्तुतः यह उपन्यास औरत होने की लड़ाई का उपन्यास है वही उसकी सफलता और पठनीयता का कारण भी है।'' 4 प्रस्तुत उपन्यास में नारी के तीन पीढियों का चित्रण हैं। मंदा, उसकी दादी, दादी की बहू यानी मंदा की माँ। इन तीनों स्त्रियों को पुरुष प्रधान व्यवस्था में जुझती हुई अपनी लड़ाई खुद लड़कर मुक्त हो जाती है। मंदा के पिता की हत्या होने के बाद विधवा माँ का संघर्ष 'इदन्नम' का गाभा हैं। जायदाद के आगे खून के रिश्ते भी पानी जैसे होते हैं।पति की मृत्यु के बाद अपने बहनोई के घर आसरा लेने वाली मंदा की विधवा माँ प्रेम बहू रिश्तेदारी का शिकार होती हैं। बहनोई रतन यादव दूर के रिश्तेदार दादा पंचम सिंह की मदद से नाबालिग मंदा की जायदाद हडपने की कोशिश करता हैं। दादी की वजह से असफल रहता हैं। लेकिन पंचम सिंह का भाई का ककजू सहानुभूति और सहायता की आड़ में मंदा की पिता की जायदाद हड़प् ही लेता हैं। नकाबपोश भेडियों के बीच फंसी मंदा अपनी लड़ाई खुद लड़ती है और अपने आप को न्याय दिलाती हैं। इस उपन्यास की नायिका के रूप में मंदा की कहानी ''या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता'' के रूप में संघर्ष की प्रेरणा देती हैं।

उपन्यास विधा के साथ अन्य विधाओं ने भी महिला सशक्तिकरण में अपना योगदान दिया हैं। कहानी साहित्य इसमें पीछे कैसा रह जाता।मेहरुन्निसा परवेज की कहानी 'कानीबाट 'मैत्रेयी पुष्पा की 'मुस्कुराती औरतें' जय नादवानी की 'बाडा' उषा प्रियावंदा की 'पचप्पन खंबे लाल दिवारें' आदि कहानीयाँ महिलाओं की पीड़ा को उजागर करती हैं। साथ में उन्हें न्याय के लिए लड़ने की प्रेरणा भी देती हैं। कहते हैं- एक स्त्री का दर्द एक स्त्री ही समझ सकती हैं। इसी कथन को सत्य करते हुए महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी को कहानियों के माध्यम से महिला दर्द को वाणी दी हैं।

शशिकला त्रिपाठी जी कहती है कि- ''स्त्री का कोई घर नहीं होता वह पिता के घर में रहे या पति के घर में, क्या फर्क पड़ता है, नारी आंदोलन से नारी की चेतना तो जागी है पर उसकी समस्याएँ तो जस की तस हैं।'' 5

'पचप्पन खंबे लाल दीवारें' उषा प्रियावंदा लिखित कहानी की नायिका सुषमा पढ़ी-लिखी,, आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होकर भी परिवार का साथ न होने से अपने प्रेम की बलि चढ़ा देती हैं। वह अपने तरीके से अपना जीवन बिताना चाहती हैं। लेकिन असफल रहती हैं। सुषमा अपनी सहेली मीनाक्षी से कहती हैं- ''मेरी निष्कृति की कोई संभावना नहीं मीनाक्षी पैंतालीस साल की आयु में मैं भी एक कुत्ता या बिल्ली पाल लूंगी— उसे सिने लगा रखूंगी —आज से सोलह बाद शायद तुम अपने बेटी को लेकर इस कॉलेज में आओगी तब भी तुम मुझे यही पाओगी कॉलेज के इन पचपन खभों की तरह स्थिर आंचल। "
6

मन्नू भंडारी जी की कहानी अभी नई के विविध रूपों का चित्रण दिखाई देता हैं। नारी जीवन की कई त्रासदी स्थितियों को व्यक्त करती हैं। आधुनिक नारी की गरिमा को उजागर करने में मन्नू भंडारी की कहानीयाँ महत्वपूर्ण रही हैं।स्वावलंबी, स्वातंत्र्य, मुक्ति की मांग करने वाली स्त्री का चित्रण मनु जी की कहानियों में दिखाई देता हैं। महिला सशक्तिकरण का जो

चित्रण मन्नू भंडारी के कहानियों में दिखाई देता हैं। वह महिलाओं के जीवन को सकारात्मक बनाने का द्योतक हैं। उनकी कहानियों के विषय ने स्त्री मुक्ति को सशक्त बनाने का काम किया है।

महादेवीजी कथन है कि स्त्रियाँ मिथ्या, दंभ, रीति-रिवाज और रुढियों में दबाई जाती हैं जिसके चलते उनकी मेधा, प्रतिभा और व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता।वह श्रमिकों का उदाहरण देते हुए कहती है कि किसान की स्त्री घर में इतना परिश्रम करके खेती के अनेक कामों में पति का हाथ बँटा सकती हैं। या साधारण श्रेणी की श्रमजीवियों की स्त्रियाँ घर-बाहर के कार्यों में सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं। वे कहती है कि नारी पुरुष से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। उनका विश्वास है कि भारतीय नारी स्सहनशील और बलिदानी हैं। स्वतंत्रता संग्राम में उसका बड़ा हाथ रहा हैं। नारी के भीतर विशेष प्राकृतिक गुण होते हैं।उनकी रक्षा करते हुए नर के समकक्ष खड़ा होना चाहती हैं। वह न के साथ कदम मिलाकर चलना चाहती हैं।

महादेव जी नारी की आर्थिक स्वतंत्रता पर बल देती है और कहती है कि नारी का पति और पिता दोनों की संपत्ति पर अधिकार होना चाहिए। नारी हर युग में छली जाती रही हैं और आज भी छली जा रही हैं। यहां नारी को भी कभी देवी, कभी दासी कहा गया, तो कभी संपत्ति बनाया गया हैं। तो कभी उसे केवल मनोरंजन का साधन ही माना हैं।आधुनिक नारी में जागृति तो आई गयी पर पुरुष अंह उसके पंख काट उड़ान भरने से रोक रहा हैं। वह नारी कीउड़ान से डर रहा हैं। वह नारी को सोने के पिंजरे में बंद रखना चाहता हैं। उसे बाहर निकालने के खतरों को वह पहचानता है क्योंकि वह नारी से ज्यादा चतुर है। 7

हिंदी का कविता साहित्य में भी नारी जीवन पर लेखन हुआ हैं। जिसमें सुनीता जैन की 'यही कहीं पर', अलका सीन्हा की 'कल की कोख से' सुमन राजे की 'उगे हुए हाथों के जंगल' आदि महिला लेखिकाओं ने अपने कविता साहित्य में नारी जीवन को चित्रित किया हैं। लड़की का जन्म होने पर सुनीता जैन अपने कविता में कहती हैं,--

"लड़की का जब जन्म हुआ,हो गए सब कंगाल,'
थाली आंगन न बजी, बँटा न लड्डू थाल।" 8

आज इस सोच में बदलाव आने लगा हैं।

उपसंहार :

अतः यह निष्कर्ष निकलता है की नारी आदिकाल से आज तक पुरुष प्रधान समाज के सोच की बंधुवा रही हैं।मान मर्यादाकी आड में उसे दबा कर रखना चाहा।कभी घर की इज्जत, तो कभी घर की देवी का कहकर उसे चार दीवारों में बंद रखा गया। लेकिन हिंदी साहित्य ने नारी को इन्हीं परंपरागत पितृसत्ताक बेडियों को तोड़ने की प्रेरणा दी है।अपने वजूद को सिद्ध करने का साहस दिया हैं। पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ हो स्त्री जब अपने आप को सिद्ध करने पर उतारू हो जाती हैं तब वह अपने आप महाकाली का रूप लेती हैं। अपने परिवार के लिए वात्सल्य की मूर्ति बन जाती हैं। महिलाओं को यह नया रूप प्रदान करने में हिंदी साहित्य हमेशा अग्रेसर रहा हैं। इसी कारण आज महिलाएँ अंतरिक्ष सफर करने में भी कामयाब रही हैं। दुनिया की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ महिलाएँ कार्यरत नहीं है।हर एक क्षेत्र में आज महिलाओं अपने आप को सिद्ध किया हैं। यही महिला सशक्तिकरण का पहला पड़ाव हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1.शरत साहित्य-नारी का मूल्य, पृष्ठ सं.-16
2.ह.प्र.द्विवेदी-बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ सं-110
3.डाॅ.नगेंद्र-रितीकाल की भूमिका,पृष्ठ सं-162
4.अंतरजाल
5.रमा शर्मा,एम.के.मिस्त्री-भारतीय नारी वर्तमान समस्याएँ और भावी समाधान, पृष्ठ सं-69
6.उषा प्रियवंदा-पचपन खम्बे लाल दिवारें,पृष्ठ सं-120
7.प्रा.डाॅ.संभाजी देसाई-महिला सबलीकरण- पृष्ठ सं.89-90
8.सुनिता जैन-यहीं कहीं पर